

पत्रावली पेशा हुआ 8। राज. भू. शोध-
कारि. के जकात देना बिना जिकोड की उचित
धारीक कमीजानी को हिलार गदी

रेकोर्डेड रु.। की राजीप कारिड नही कही
गए कोश में जारी 7.9 कोश। की कगधि
कगामी देरी यह कार्य जारी है

दगावली इफेजा नामील से. 05 नंबर
21-11-2017 को देखा है

21.11.17 पत्रावली पेश हुई। परीक उभपफा उपस्थित
बहस सुनी गई। वास्ते निस्तारण दिनांक
27.11.17 को पेश हो

27.11.17 पत्रावली पेश हुई। बहस पर मनन विरागपा।
प्रकरण में वादी कमजीत कोर ने दिनांक 15.08.17
को ग्राम पंचायत 182 द्वारा स्वीकृत इंतडाक
को चुनौती देते हुए, भूराजस्व अधिनियम की
धारा 75 के तहत जगजगसिंह 310 नीतसिंह
तथा तरसेम सिंह 40 वरिनसिंह को पछडार
बनाया है। वाद मुलाखिड स्वर्गीय वरिनसिंहने
दिएने नीवन काज में वादी से 6.95 लाख रुपये
उधार लिये तथा 16.12.14 तक 6 पाने की चुकाया।
तत्पश्चात 6 पाने व किसक न चुकाने पर राज.
भूष उधार निवारण अधिनियम 1957 के तहत
शरण निवारण अधिनियम, की गंगानगर में 10.3.16
को 173 वाद पेश किया। वादी के मुलाखिड पत्किदी

संख्या 3 को इस की पूरी जानकारी होने के बाद मुद्रा कादी संख्या 2 को उपहार पत्र 17.7.17 को तहसीर कच्चापुर तहसील में देखा गया।

A1
2

काही के मुताबिक राज. कृषि उपहार निवारण अधिनियम 1957 के धारा 13 के तहत ऐसी कोई भी संपत्ति जिसका वाद धारा 6 के तहत मजबूत न्यायालय में चल रहा है, उसका कोई भी हस्तांतरण मजबूत निवारण न्यायालय की सहमति के बिना कर्कष्य होता है। इसी Section 13 की उपधारा (2) के तहत मजबूत के निवास स्थान की घोषणा द्वारा रखने वाले मजबूत मजबूत को इस तरह की संपत्ति के हस्तांतरण को स्वीकृती करने की शक्ति दी गई है।

तदिकादी द्वारा बताया

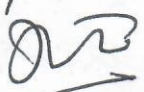
कि उक्त तहसील में घोषणाकारिता मजबूत निवारण न्यायालय की है जिसमें 21.8.17 को दिने आदेश में स्पष्ट किया है कि ऐसा कोई भी मजबूत द्वारा दिया जाने वाले हस्तांतरण अपने आप में अनदेखित तथा शून्य होगा। तदिकादी द्वारा यह तर्क दिया गया कि इस न्यायालय को न तो घोषणाकारिता है न ही कोई वाद कारण तथा वाद को लाने जाने की आवश्यकता है।

वाद-विवाद का विवेचन किया गया तथा पाया गया कि Rajasthan Relief of Agriculture Indebtedness Act 1957 की धारा 13 के तहत हस्तांतरण को कर्कष्य

रूपखण्ड अधिकारी (राजस्व)

Continuation Note Sheet

घोषित करने की शक्ति संबंधित मंग
निर्वाण-पापानप को ही है तथा इस
पापानप को कोई होगधिकार नहीं है।
तथा जब संपत्ति के मंगी द्वारा रिपे जाने वाले
हस्तान्तरण को कर्षेध घोषित करने के
साधन विविक्त रूप से उपलब्ध है अतः
अन्तर-ध कर्षेधनियम 1957 के धारा 75
में वर्णित सामान्य उपबंध स्वतः हीर्गण
हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जब इस
स्थिति विविक्त पर विविक्त पापानप द्वारा
विचारण रिपे जा चुका है, तब इस
पापानप को फरण पर विचारण करने
की कोई क्षमता नहीं होती।
ऐसी स्थिति में फरण स्वार्थि कर दायिण
दफतर रिपे जाता है। पभावली धारतवणी
होकर नंबर से कम हो। पूर्व में जारी स्थान
कादेश भी पभावली के स्वार्थि होने के कारण
स्वार्थि रिपे जाता है। निगेप काज दिनांश
27.11.17 को स्वरे व्रकास सुगाया जाय।


(अक्षपाल आहुजा)
उपखण्ड अधिकारी (राजस्व)
श्रीगंगानगर